RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-03
Issue-01
January-2018

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

कडाना बांध परियोजना के क्षेत्र में जनसंख्या वृद्धि, ग्रामीण और शहरी जनसंख्या वितरण

Bhuri Lal Meena

Lecturer of Geography, Government College Sarada, Udaipur, Rajasthan

ARTICLE DETAILS

Article History

Published Online: 28 January 2018

Keywords

जनसंख्या , कड़ाना बांध , ग्रामीण , नगरीय

ABSTRACT

जनसंख्या वितरण एवं संरचना का अध्ययन करने से स्पष्ट होता है कि सघन जनसंख्या क्षेत्र सामान्यतया नदियों के मैदानी क्षेत्रों में है जबकि पर्वतीय, पहाड़ी एवं समतल-असमतल, मैदानी क्षेत्रों में विरल जनसंख्या पाई जाती जनसंख्या संरचना का विश्लेषण मानव अधिवासों में आवासित जनसंख्या वितरण को भी आधार माना गया है जिससे जनजातिय समाज का सामाजिक--आर्थिक विकास को दिशा एवं गति प्रदान की जा सकती है। जनसंख्या के इस वितरण प्रतिरूप को हम क्षेत्र में भौतिक एवं सामजिक कारणों के अर्न्तःसम्बन्धों का प्रतिफल मान सकते है।

परिचय –

किसी भी प्रदेश के उत्पत्ति के संसाधनों में जनसंख्या का महत्त्व अधिक होता है। प्राकृतिक संसाधनों का उपभोग और प्रदेश की औद्योगिक एवं व्यापारिक उन्नति वहां पायी जाने वाली जनसंख्या के वितरण उसके घनत्व, लोगों के स्वभाव कार्य क्षमता पर निर्भर करती है इसलिये जनसंख्या का अध्ययन विशेष महत्त्व रखता है। जनसंख्या वृद्धि से अभिप्राय दो सामयिक कालों के मध्य होने वाले जनसंख्या परिवर्तनों से है। पूर्व में प्राप्त आंकड़ों, निर्धारित जनगणना एवं वर्तमान में जनसंख्या के अन्तर को प्रतिशत के आधार पर ज्ञात करते हैं। यदि पूर्व में की गई गणना से अधिक संख्या पाई जाती है तो उसे जनसंख्या की वृद्धि दर कहते हैं। प्रदेश में जैलिस्की महोदय ने इस सम्बन्ध में बताया कि "किसी क्षेत्र में जनसंख्या प्रतिरूप की सही जानकारी प्राप्त करने के लिए उस क्षेत्र के भौतिक स्वरूप, आर्थिक संरचना, सांस्कृतिक और सामाजिक संरचना का सम्यक ज्ञान होना आवश्यक है। जनसंख्या एक सांस्कृतिक पक्ष है। अतः उस क्षेत्र के सम्पूर्ण मानव भूगोल का भी ज्ञान आवश्यक है। अध्ययन क्षेत्र में जनसंख्या के स्वरूप में जनसंख्या के घटने एवं बढ़ने पर यह जनसंख्या के स्वरूप में ऋणात्मक व घनात्मक वृद्धि कहलाती है। यह उस क्षेत्र / प्रदेश की भौतिक व सामाजिक दशाओं से प्रभावित रहती है।

अध्ययन क्षेत्र –

अध्ययन क्षेत्र माही नदी पर गुजरात के पंचमहल मे स्थित कड़ाना बांध परियोजना के आसपास के प्रमुख क्षेत्रों है इसका डूब क्षेत्र राजस्थान राज्य के बांसवाड़ा जिले की बागीदौरा व गढ़ी तथा डूंगरपुर जिले की सागवारा तहसील मे आता है।

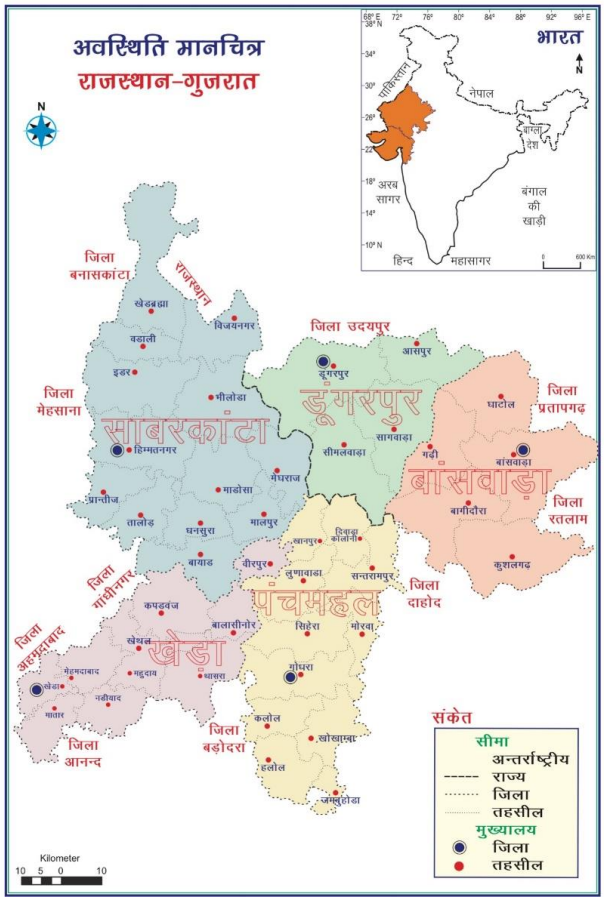

आंकड़ों का संकलन –

अध्ययन प्रदेश में सन् 1901 में 13,98,112 व्यक्ति निवास कर रहे थे वहीं सन् 2011 में 4,03,05,287 व्यक्ति निवास कर रहे हैं। अध्ययन प्रदेश की जनसंख्या में सर्वाधिक वृद्धि दर 1951 से 1961 के दशक में 29.28 प्रतिशत रही जबकि सबसे कम वृद्धि 1911 से 1921 के दशक में 11.94 प्रतिशत रही। अध्ययन प्रदेश की जनसंख्या वृद्धि दर सन् 1971 में 28.28 प्रतिशत, 1981 में

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

26.50 प्रतिशत, 1991 में 20.92 प्रतिशत, 2001 में 20.40 प्रतिशत तथा 2011 में 17.89 प्रतिशत रही। सन् 1991 से 2001 के मध्य अध्ययन क्षेत्र के सभी जिलों में जनसंख्या वृद्धि दर 13 से 30 प्रतिशत के मध्य रही। सर्वाधिक वृद्धि दर 29.94 प्रतिशत बांसवाड़ा जिले में एवं सबसे कम 13.30 प्रतिशत खेड़ा जिले की अंकित हुई है। सन् 2001-2011 के मध्य वृद्धि दर 13 से 27 प्रतिशत के मध्य रही। सर्वाधिक वृद्धि 26.58 प्रतिशत बांसवाड़ा व न्यूनतम वृद्धि दर खेड़ा जिले की 13.70 प्रतिशत अंकित की गई |

अध्ययन प्रदेश : जनसंख्या वृद्धि (1901 से 2011)

क्र.सं.	जिला	1901	1911	1921	1931	1941	1951	1961	1971	1981	1991	2001	2011
1	बांसवाड़ा	165350	187468	219524	260670	299913	366559	475245	654586	886660	1155600	1501589	1797485
	वृद्धि दर	-	13.38	17.10	18.74	15.05	18.89	33.29	37.74	35.44	30.34	29.94	26.58
2	डूंगरपुर	100103	139102	189272	227544	274282	308243	406944	530258	682845	874549	1107643	1388552
	वृद्धि दर	-	59.03	18.90	20.22	20.54	12.38	32.02	30.30	28.78	28.07	26.65	25.36
3	पंचमहल	281876	364424	423992	504580	580563	694054	888549	1106441	1376101	1682333	2025277	2390776
	वृद्धि दर	-	29.30	16.30	19.00	15.10	19.50	28.00	24.50	24.30	22.30	20.40	17.72
4	साबरकांटा	329865	373812	412046	489056	572948	684017	918587	1187637	1502284	1761086	2082531	2428589
	वृद्धि दर	-	13.30	10.20	18.70	17.20	19.40	34.30	29.30	26.50	17.20	18.30	16.56
5	खेड़ा	520918	510498	518528	564081	671103	809778	1010797	1267590	1556355	1786794	2024216	2299885
	वृद्धि दर	-	2.00	1.60	8.80	19.00	20.70	24.80	25.40	22.80	14.80	13.30	13.70
	कुल योग	**1398112**	**1575304**	**1763362**	**2045931**	**2398809**	**2862651**	**3700122**	**4746512**	**6004245**	**7260362**	**8741256**	**10305287**
	वृद्धि दर	-	**12.67**	**11.94**	**16.02**	**17.25**	**19.34**	**29.26**	**28.28**	**26.50**	**20.92**	**20.40**	**17.89**

स्रोत : जिला सांख्यिकीय रूपरेखा, 2011

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

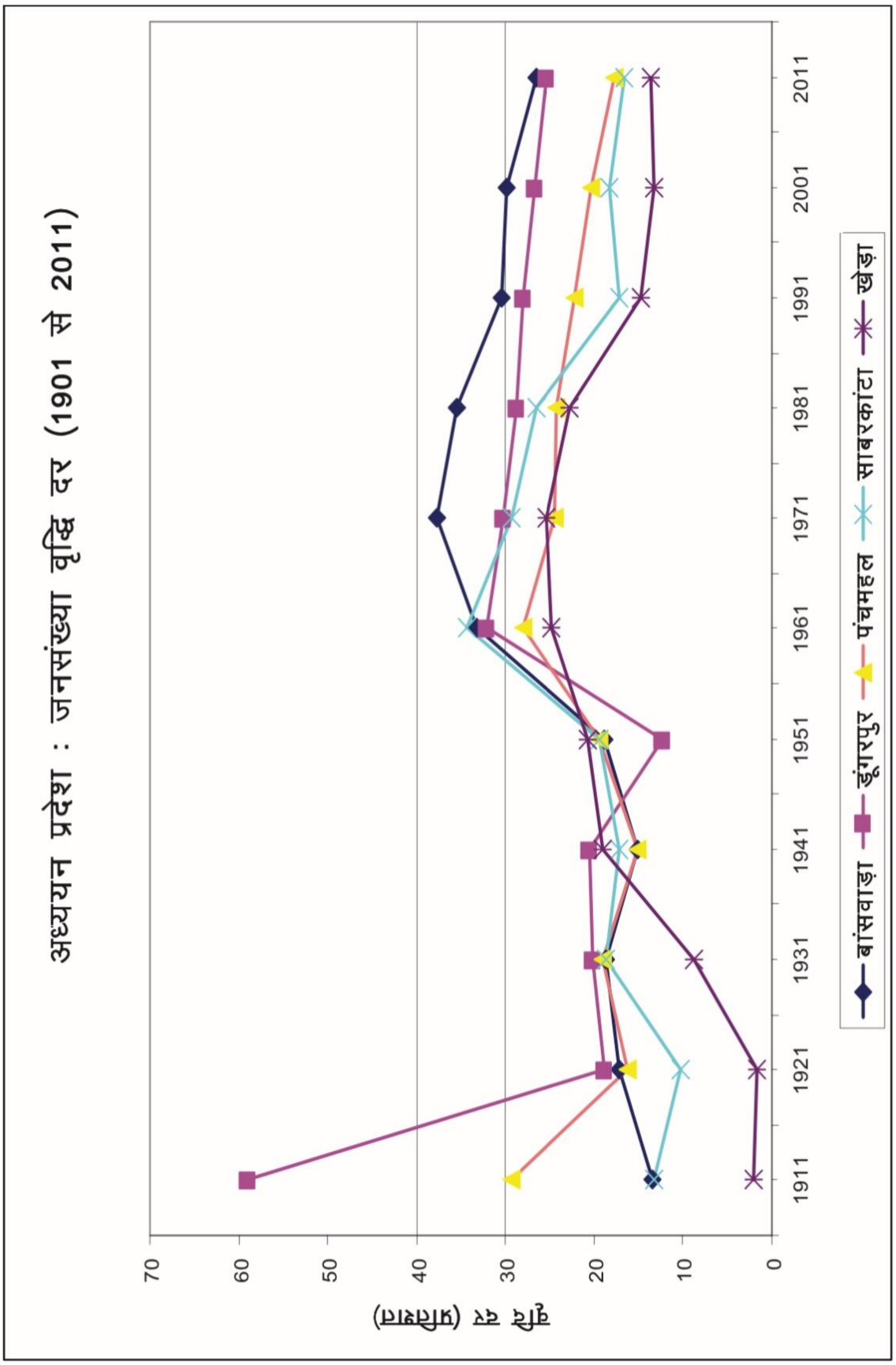

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या वितरण

ग्रामीण जनसंख्या वितरण

अध्ययन प्रदेश में जनसंख्या के वितरण के आधार पर पाया गया है कि कुल जनसंख्या में ग्रामीण जनंसख्या का स्तर उच्च है। जो कुल 86.04 प्रतिशत है। जनसंख्या वितरण के अति उच्च स्तर में 93 से 100 प्रतिशत वाली तहसीलों को सम्मिलित किया गया है जिसमें घाटोल, बागीदौरा, आसपुर, खानपुर, कडाणा, मोरवा, खोखम्बा, जगबुगहोडा, धनसेरा तथा मातर में शत प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या निवास करती है तथा सीमलवाड़ा (97.88), कुशलगढ़ (97.19), गढ़ी (94.66), विजयनगर (94.15), मालपुर (93.48), भीलूडा (93.48), मेघराज (93.20) तथा शेहेरा (93.09) आदि में ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत अधिक पाया गया है।

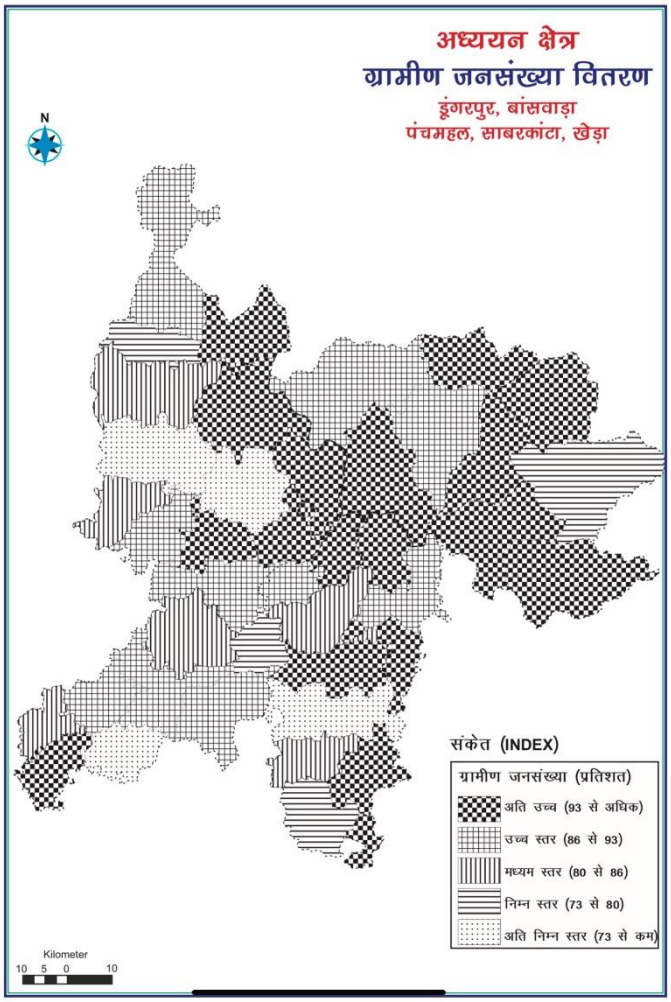

अध्ययन प्रदेश में उच्च स्तर की जनसंख्या के अन्तर्गत 86 से 93 प्रतिशत के मध्य की जनसंख्या के द्वारा प्रदर्शित किया गया है। इसमें सन्तरामपुर (92.67), खेड़ब्रह्मा (91.47), डूंगरपुर (90.37), सागवाड़ा (90.05), वीरपुर (89.79), खैथल (89.42), तालोड (88.15), थासरा ,(87.88), बायड़ (87.84), माधुदा (86.63) एवं मेहमदाबाद को सम्मिलित किया गया है। यहाँ ग्रामीण जनसंख्या का बसाव उच्च स्तर पर है अध्ययन प्रदेश में मध्यम स्तर की जनसंख्या के अन्तर्गत 76.0 से 86.0 प्रतिशत के मध्य की जनसंख्या के अन्तर्गत लुनावाड़ा (85.63), प्रान्तीज (85.37), कलोल (84.96), ईडर (83.60), कपड़वंज (84.95) व खेड़ा तहसीलों को सम्मिलित किया गया। अध्ययन प्रदेश में ग्रामीण जनसंख्या की दृष्टि से निम्न जनसंख्या बांसवाड़ा 77.97), वाडाली (77.65), वालासीनौर (73.03) व हलोल (72.99) में है। जहॉ 72.0 से 79.0 प्रतिशत के मध्य ग्रामीण जनसंख्या निवास करती हैं। अध्ययन प्रदेश में ग्रामीण जनसंख्या की दृष्टि से सबसे अति निम्न जनसंख्या मोडासा (69.61), हिम्मतनगर (68.82), गोधरा (64.88), नडियाद (48.66) में है।

नगरीय जनसंख्या वितरण

अध्ययन प्रदेश में नगरीय जनसंख्या के उच्च स्तर को 28 प्रतिशत से ऊपर की जनसंख्या क॑ आधार पर निर्धारित किया गया है जिसमें मुख्यतः गुजरात राज्य की नडियाद (51.34), गोधरा (35. 12), हिम्मतनगर (34.08) एवं मोडासा

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

(30.39) सम्मिलित किया जाता हैं। उच्च स्तर के अन्तर्गत (22.0 से 28.0 प्रतिशत) वाली नगरीय जनसंख्या को सम्मिलित किया गया जिसमें मुख्यतः हलोल (27.02), वालासीनौर (26.97), वाडाली (22.35) तथा बांसवाड़ा (22.03) की तहसीलों को सम्मिलित किया गया है।

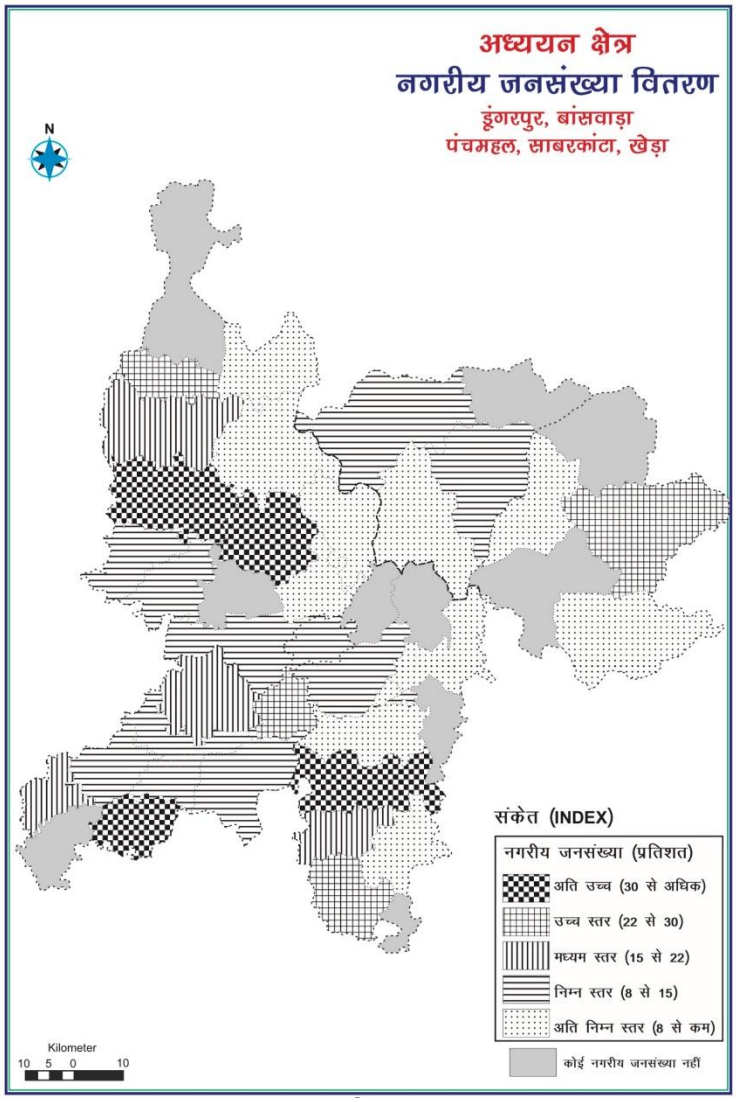

अध्ययन प्रदेश में नगरीय जनसंख्या के मध्यम स्तर को 45.0 से 22 प्रतिशत के मध्य रखा गया है। जिसमें खेड़ा (19.96), कपडवंज (18.05), ईडर (16.40) तथा कलोल (15.04) तहसीलों को सम्मिलित किया गया है। निम्न स्तर में 9.0 से 15.0 से कम जनसंख्या प्रतिशत की 11 तहसीलों को सम्मिलित किया गया है जिनमें प्रान्तीज, लुनावाडा, मेहमदाबाद, माघुदा, बायड़, थासरा, तालोड, खैथल, वीरपुर, सागवाड़ा व डूंगरपुर तहसीलें आदि। अति निम्न स्तर में 9.09 से कम जनसंख्या प्रतिशत वाली 20 तहसीलों को सम्मिलित किया गया है। जैसे खेड़ब्रह्मा, सन्तरामपुर , शेहरा, मेघराज, भीलूडा, मालपुर, विजयनगर, गढ़ी, कुशलगढ़ एवं सीमलवाड़ा में नगरीय जनसंख्या का प्रतिशत 2.0 से 9.0 प्रतिशत के मध्य है तथा शेष घाटोल, बागीदौरा, आसपुर, खानपुर, कडाणा, मोरवा, खोंखम्बा ,जमबुनहोडा, धनसेरा एवं मातर तहसीलों में कोई नगरीय जनसंख्या निवास नहीं करती है।

अध्ययन क्षेत्र के बांसवाड़ा, डूंगरपुर (राजस्थान), पंचमहल, साबरकांटा, खेड़ा (गुजरात) जिले में ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या के वितरण प्रतिशत पर दृष्टिपात किया जाए तो स्पष्ट हो जाता है कि प्रत्येक जनगणना में वितरण भिन्न-भिन्न पाया गया तथा ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत हमेशा नगरीय जनसंख्या प्रतिशत से ऊपर ही रहा है। वर्ष 2001 की जनगणना में बांसवाड़ा ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 92.81 रहा जो 2011 में बढ़कर 92.90 प्रतिशत पहुँच गया, डूंगरपुर जिले में ग्रामीण जनसंख्या प्रतिशत 2001 में 9270 रहा जो 2011 में भी बढ़कर 93.61 प्रतिशत हो गया। इसी प्रकार गुजरात राज्य के पंचमहल जिले की वर्ष 2001 का ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 87.49 रहा जो वर्ष 2011 में घटकर 86.00 हो गया, साबरकांटा जिले की वर्ष 2001 का ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 89.10 रहा जो वर्ष 2011 में घटकर 85.02 प्रतिशत रह गया एवं खेड़ा जिले की वर्ष 2001 का ग्रामीण जनसंख्या का प्रतिशत 80.06 रहा जो वर्ष 2011 में घटकर 77.24 प्रतिशत रह गया। नगरीय

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

जनसंख्या के अध्ययन से स्पष्ट होता है कि डूँगरपुर एवं बांसवाड़ा की नगरीय जनसंख्या में कमी हुई जबकि पंचमहल, साबरकांटा एवं खेड़ा जिलों के नगरीय जनसंख्या में वृद्धि हुई।

जनसंख्या का सघन विकास एवं बसाव उद्योगों के निकट अधिक देखने को मिलता है। जिससे रोजगार आसानी से उपलब्ध हो सकें। इस प्रकार अधिकांश बस्तियों का विकास उद्योगों, नदी व जल आपूर्ति, सिंचाई सुविधा एवं उपजाऊ भूमि क्षेत्रों (मैदानी भागों) में होता है। जिसमें जनसंख्या को कृषि एवं अन्य व्यवसाय हेतु उचित भूमि एवं अन्य संसाधनों की उपलब्धता आसान हो सके। जिससे वहां के निवासरत जनजातिय परिवारों का सामाजिक- आर्थिक विकास हो सकें |

संदर्भ ग्रंथ -

1. Ansari, M.H. (1991), Education and Economic Development, Economic and Political Weekly, Vol. 27, No. 51/52, pp. 171-177.
2. Bansal, P.C. (1974), Agricultural Statitics in India, 2nd ed. New Delhi, Amold Heimmann.
3. District Census Handbook, District Kheda, Census of India, 2011, Directorate of Census Operations, Gujarat, Ahmedabad.
4. Ganguli, B.N. (1998), Trends of Agriculture and Population in Gangas Valley, A Study in Agricultural Economics, London.
5. Ghosh, B.N. (1977), Economic Development and Planning, National Publishing House, New Delhi, pp. 3-4.
6. Gorishanker, Heera Chand Ojha, Banswara Rajya Ka Itihas, Vadik Ganthlaya, Ajmer.
7. Gorishanker, Heera Chand Ojha, Dungarpur Rajya Ka Itihas, Vadik Ganthlaya, Ajmer.
8. Grigg, D.B. (1975), Population Pressure and Agriculture Chand, Progress in Geography, Vol. 8.
9. Heera Lal (1998), Population Geography, Mittal Publications, Merat.
10. Shets, S.T. (2009), Levels of Social - Economic Development in Solapur District (M.S.) : A Geographical Analysis.
11. Singh, A.K. (1994), Tribal Development in India, Classical Publication Company, New Delhi, pp. 99.
12. Singh, Bhupendra (1981), "Tribal Development Strategy and Approach", T.D.A.C. Publishing Company, New Delhi, pp. 15.
13. Vyas, P.R. (1991), Social Amenities and Regional Development, Rawat Publication, Jaipur.
14. Vyas, V.S. (ed.) (1997), Policies for Agricultural Development, Rawat Publications, Jaipur.

© RRIJM 2015, All Rights Reserved